Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: IV A

नाम : _____

~सामूहिक कविता पाठ~

चतुर चित्रकार

चित्रकार सुनसान जगह में, बना रहा था चित्र,
इतने ही में वहाँ आ गया, यमराज का मित्र।

उसे देखकर चित्रकार के तुरंत उड़ गए होश,
नदी, पहाड़, पेड़, पत्तों का, रह न गया कुछ जोश।

फिर उसको कुछ हिम्मत आई, देख उसे चुपचाप,
बोला-सुंदर चित्र बना दूँ, बैठ जाइए आप।

उकरू-मुकरू बैठ गया वह, सारे अंग बटोर,
बड़े ध्यान से लगा देखने, चित्रकार की ओर।

चित्रकार ने कहा-हो गया, आगे का तैयार,
अब मुँह आप उधर तो करिए, जंगल के सरदार।

बैठ गया पीठ फिराकर, चित्रकार की ओर,
चित्रकार चुपके से खिसका, जैसे कोई चोर।

बहुत देर तक आँख मूँदकर, पीठ घुमाकर शेर,
बैठे-बैठे लगा सोचने, इधर हुई क्यों देर।

झील किनारे नाव थी, एक रखा था बाँस,
चित्रकार ने नाव पकड़कर, ली जी भरके साँस।

जल्दी-जल्दी नाव चला कर, निकल गया वह दूर,
इधर शेर था धोखा खाकर, झुँझलाहट में चूर।

शेर बहुत खिसियाकर बोला, नाव ज़रा ले रोक,
कलम और कागज़ तो ले जा, रे कायर डरपोक।

चित्रकार ने कहा तुरंत ही, रखिए अपने पास,
चित्रकला का आप कीजिए, जंगल में अभ्यास।

DC

Daly College, Jr. School

Subject: Hindi Class: IV 'B'

नाम : _____

"सामूहिक कविता पाठ "

"हमारी किताबें "

किताबें करती हैं बातें ,

बीते ज़मानों की ,

दुनिया की , इंसानों की ।

आज की , कल की ,

एक-एक पल की ,

खुशियों की , गमों की ,

फूलों की , बमों की ,

जीत की , हार की ,

प्यार की , मार की !

सुनोगे नहीं क्या ,

किताबों की बातें ?

किताबें कुछ तो कहना चाहती हैं ,

तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ।

किताबों में चिड़ियाँ दिखे चहचहाती ,

कि इनमें मिले खेतियाँ लहलहाती ,

किताबों में झरने मिलें गुनगुनाते

बड़े खूब परियों के किस्से सुनाते ।

किताबों में साईंन्स की आवाज़ है ,

किताबों में रॉकिट का राज़ है ,

हर एक इल्म की इनमें भरमार है ,

किताबों का अपना ही संसार है ।

क्या तुम इसमें

जाना नहीं चाहोगे ?

जो इसमें है , पाना नहीं चाहोगे ?

किताबें कुछ तो कहना चाहती हैं ,

तुम्हारे पास रहना चाहती हैं ।

– सफ़दर हाशमी

Daly College, Jr. School
Subject: Hindi
Class: IV-C

Date-: ---------- **Name: ----------**

सामूहिक कविता पाठ

सभा का खेल

सभा-सभा का खेल आज हम
खेलेंगे जीजी आओ,
मैं गांधी जी, छोटे नेहरू
तुम सरोजिनी बन जाओ।
मेरा तो सब काम लंगोटी
गमछे से चल जाएगा,
छोटे भी खद्दर का कुरता
पेटी से ले आएगा।
लेकिन जीजी तुम्हें चाहिए
एक बहुत बढ़िया साड़ी,
वह तुम माँ से ही ले लेना
आज सभा होगी भारी।
छोटे बोला देखो भैया
मैं तो मार न खाऊँगा,
मुझको मारा अगर किसी ने
मैं भी मार लगाऊँगा!
कहा बड़े ने छोटे जब तुम
नेहरू जी बन जाओगे,
गांधी जी की बात मानकर
क्या तुम मार न खाओगे?

खेल-खेले में छोटे भैया
होगी झूठ-झूठ की मार,
चोट न आएगी नेहरू जी
अब तुम हो जाओ तैयार।
हुई सभा प्रारंभ, कहा
गांधी से चरखा चलवाओ,
नेहरू जी भी बोले भाई
खद्दर पहनो पहनाओ।
छोड़ो सभी विदेशी चीज़ें
लो देशी सूई धागा,
इतने में लौटे काका जी
नेहरू सीट छोड़ भागा।
काका आए, काका आए
चलो सिनेमा जाएँगे,
केक-मिठाई खाएँगे!
जीजी, चलो, सभा फिर होगी
अभी सिनेमा है जाना,
आओ, खेल बहुत अच्छा है
फिर सरोजिनी बन जाना।

- सुभद्राकुमारी चौहान